हाथी काला मोटा
सूँड़ नाक की जगह लटकती
जैसे काला सोंटा
धीरे धीरे चलता
लगता काला पत्थर मानों
अपने आप लुढ़कता
हाथी है काले पहाड़ सा
आँखें छोटी छोटी
कान सूप से फट फट करते
हुलिया अजब अनोखी
डालें पत्ती जो कुछ पाता
पकड़ उसे मुँह रखता
सूँड़ हाथ बन जाती उसकी
सभी काम वह करता।



शेर दहाड़ता गुर्राता है
सारा जंगल थर्राता है
राजा है वह सारे वन का
जो चाहे सब करता मन का
काली पीली धारी तन में
अलग दीखता वह जंगल में
तगड़े दाँत नुकीले पंजे
लगा छलाँग पकड़ता पल में
भूखा होता, तभी मारता
नहीं शिकार व्यर्थ में करता



काली मोटी दिखती भैंस
दूध ढेर सा देती भैंस
महिषी भी ये है कहलाती
रानी जैसी शान बताती
बँधे बँधे ये खाना खाती
पानी सानी दाना पाती
इसको दलता मलता ग्वाला

ढेरों पानी से नहलाता
डबरे में घुस जाती भैंस
कीचड़ में सन जाती भैंस
गर्मी सही न जाती इससे
कीचड़ पानी किसी तरह से
शीतलता पा जाती भैंस ।



हिरना हिरनी रहते सँग सँग
मौज किलोलें करते सँग सँग
हरी घास जंगल की खाते
एक दूसरे को दुलराते
लम्बी आँखें चंचल चपला
हिरन इसी से सुन्दर लगता



मुनमुन बकरी में में करती
सुन्दर चिकनी प्यारी लगती
कान उठाये भागा करती
पौधों की सब पत्ती चरती
दौड़ लगा जब टाँगें थकतीं
चरवाहे के कंधों चढ़ती
मैं भी चरवाहा बन जाऊँ
प्यारी बकरी गोद उठाऊँ ।





तेज भागता सरपट सरपट
छोटे छोटे पैरों से
लम्बे कान उठाये बैठा
चौकन्ना हो आहट से
मुश्किल है खरगोश पकड़ना
दौड़ भागता है झट से

गाजर खाता नरम पौध भी
बच ना पाती है उससे
भूरे से मटमैले रँग का
आ जाता है जंगल से
साथ खेलने को पालो तो
मिल जाता है रँग का उजले



बन्दर नटखट भागा झटपट
रोटी लेकर चढ़ा डाल पर
दिखा दिखा कर चिढ़ा रहा है
खाता ज्यों मुँह बिरा रहा है
डमडम डमडम बजता डमरू
पहनायेगा लहँगा घुँघरू
पकड़ेगा जब बन्दर वाला
भूलेंगे सब मस्ती लाला।



काले बालों वाला भालू
पैने दाँतों वाला भालू
आँखें छिपी बाल के पीछे
लम्बे से मुँह वाला भालू
छत्ता तोड़ शहद खा जाता
पेड़ों पर चढ़ जाता भालू
पकड़ मदारी नाच नचाता
मोटा धड़ मटकाता भालू ।



गैया पैने सींगों वाली
चितकबरी या भूरी काली
तन को सींगों से खुजलाती
नहीं मारती चारा खाती
ढेरों दूध पिलाती सब को
कुछ देती अपने बच्चे को
बहुत प्यार करती बछड़े को
चाट चाट सहलाती उसको।







पशुओं में है अजब अनोखा
तुमने क्या जिराफ़ को देखा
पैर नहीं हैं सभी बराबर
आगे लम्बे पीछे घट कर
गर्दन लम्बी खिंची हुई सी
आँखें छोटी मिची हुई सी
बाड़े से निकाल कर गर्दन
झाँक देखता बाहर हरदम
मूँगफली जब कोई देता
गर्दन झुका जिराफ़ ले लेता।

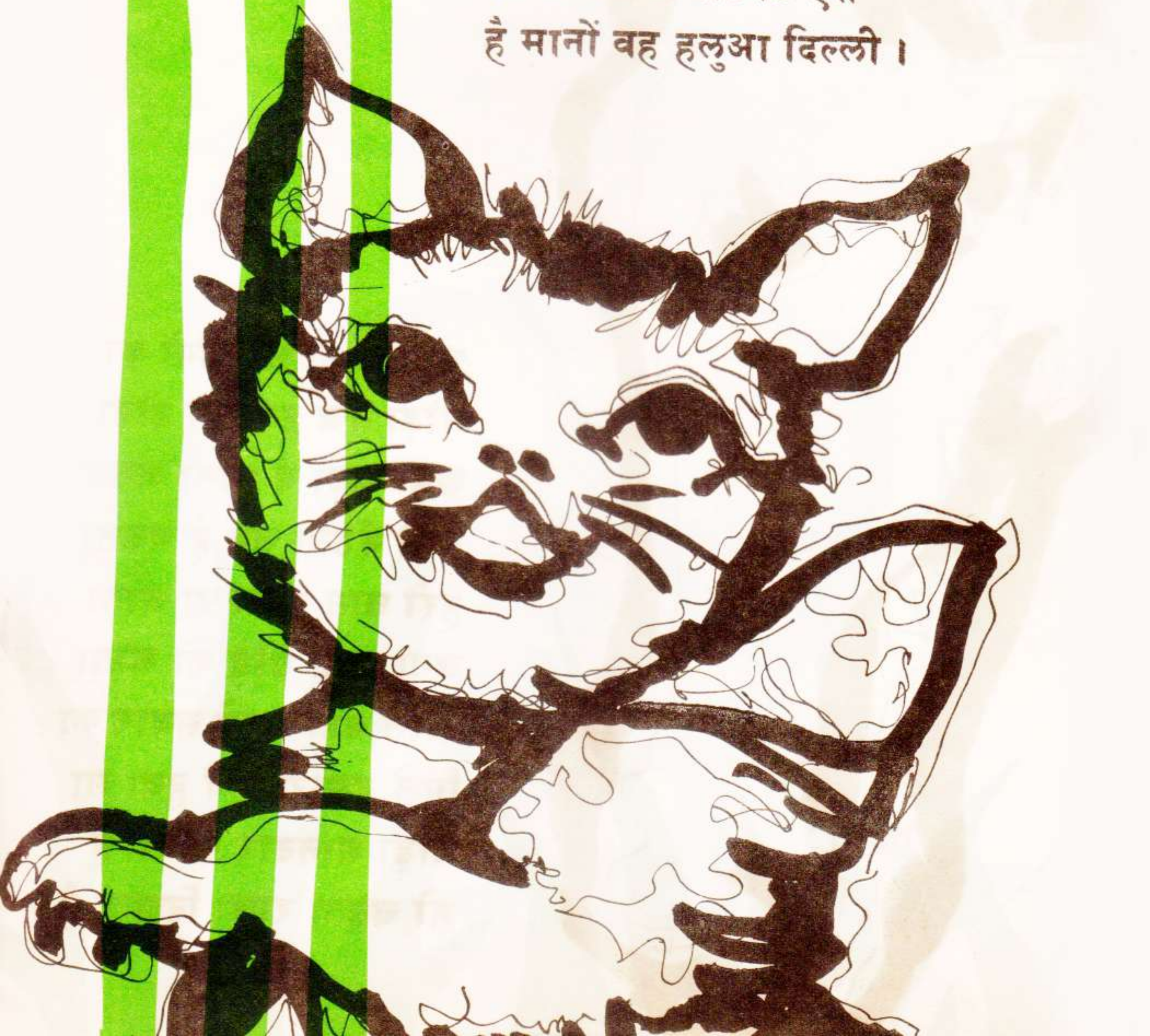
कुत्ता सबसे प्यारा लगता
साथ सभी के खेला करता
घर के प्राणी जैसा है वह
घरवालों से अलग न लगता
गेंद पकड़ कर दौड़ लगाता
पंजा पकड़ा हाथ मिलाता
गैया बकरी घुसें बाग में
दौड़ भूँक कर दूर भगाता
दिन में साथी बना खेलता
चौकीदार रात बन जाता।



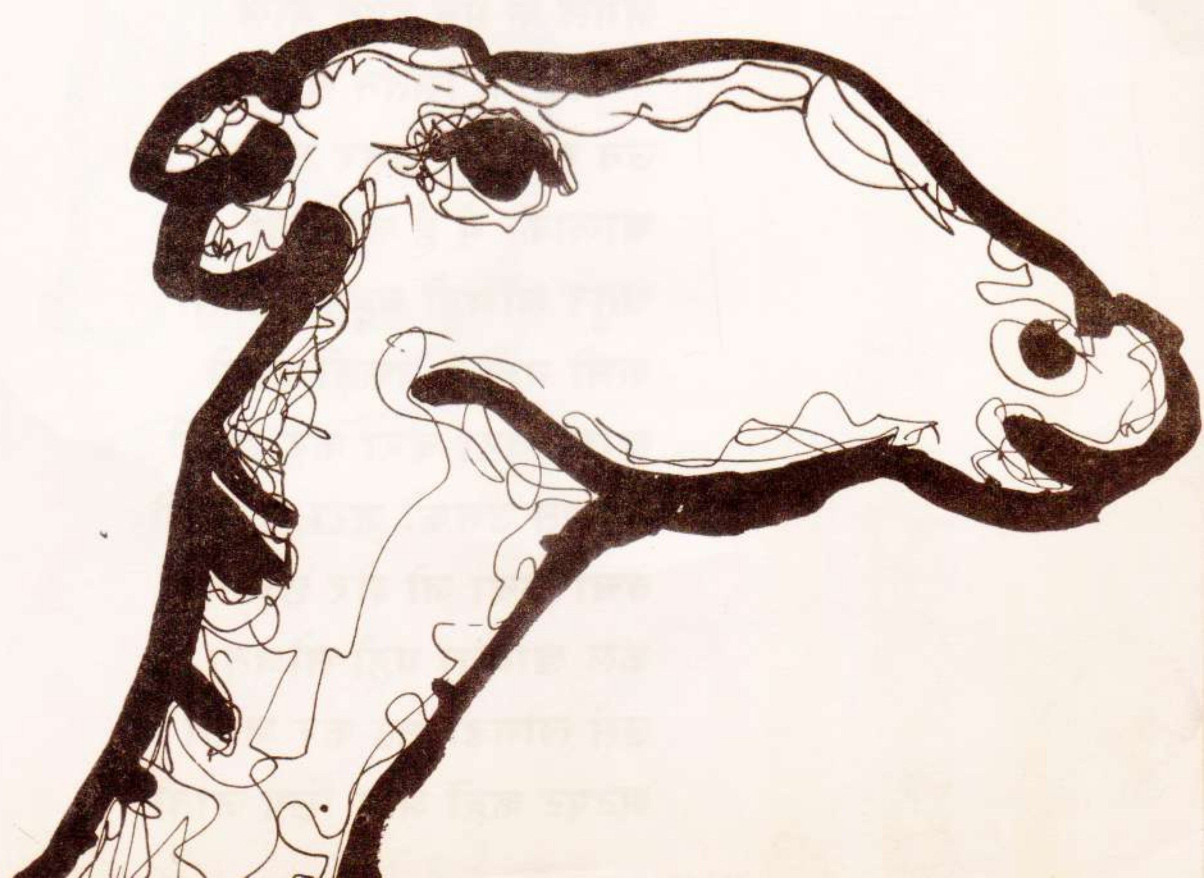


फुर्तीली पतली टाँगों का
घोड़ा तेज हवा सा दौड़ा
खड़ा खड़ा ये सोता जगता
तभी बैठता जब है थकता
हरी घास दाना पा जाता
चना बहुत घोड़े को भाता
दोस्त बड़ा अपने सवार का
मिले इशारा भगे हवा सा
घोड़ा शानदार सजता है
जो चढ़ता राजा दिखता है।

म्याऊँ बिल्ली, बड़ी चिबिल्ली
एक जगह वह कभी न रुकती
इधर उधर बस दौड़ा करती
टोल पड़े, ज्यों उड़ती गिल्ली
दूध मलाई चट कर जाती
तुरत मारती चूहा पाती
खाती उसको झटपट ऐसे
है मानों वह हलुआ दिल्ली।

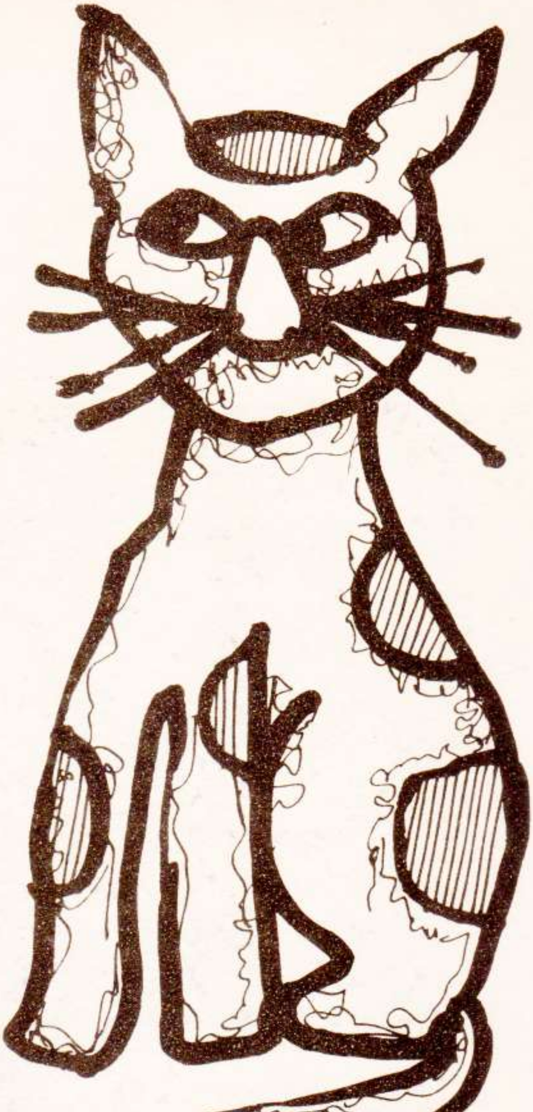


रोज सबेरे कितने ऊँट
पीठ लाद ढेरों तरबूज़
धीरे धीरे कहाँ चले
जब पहुँचेंगे पेड़ तले
गर्दन ऊँची कर खायेंगे
कड़वी नीम चबा जायेंगे
मालिक हाँकेगा जब उनको
बल बल बल बल गुस्सायेंगे ।





जंगल के सब रहने वाले
पशुपक्षी हैं जितने सारे
उन सबसे है चतुर सयानी
चालाकी में है लासानी
चतुर लोमड़ी बहुत छकाती
कभी नहीं है पकड़ी जाती
खाना चुरा चरा कर खाती
मेहनत उसको जरा न भाती
बचा खुचा जो शेर छोड़ता
कल खायेगा यही सोचता
उसे लोमड़ी चट कर जाती
झटपट कहीं और छिप जाती ।



जानवर - बच्चों की कविताएँ

JANWAR - POEMS FOR CHILDREN

नवीन संस्करण □ मार्च १६६६

प्रकाशक □ हंस प्रकाशन, इलाहाबाद

मुद्रक □ व्हीलर ऑफसेट यूनिट, इलाहाबाद

मूल्य □ पन्द्रह रुपये

